卐 ॐ 卐

- अष्टम सत्र -

मानव संस्कृति में आरोग्यता का स्वरूप

मानव जीवन में अनेक क्लेश, अभाव तथा दुःख हैं। उनमें से शरीर का रोगी होना कदाचित् सर्वाधिक दुःखदायी है। रोगी व्यक्ति न तो सांसारिक सुखों को भोग सकता है और न ही उसे परमार्थ की प्राप्ति हो सकती है। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास है *(Sound Mind lives in Sound Body)* इसीलिए कहा गया है, कि ***"पहला सुख है निरोगी काया"।*** विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा स्वास्थ्य की परिभाषा निम्न प्रकार से की गयी है -

Health is a state of complete physical, mental and social well being and not merely an absence of disease or infirmity. A fourth dimension has also been suggested namely spiritual health.

अर्थ :- स्वास्थ्य का अर्थ है, कि व्यक्ति शरीर से, मन से तथा सामाजिक रूप से संतुलित हो। मात्र रोग एवम् दुर्बलता के अभाव को स्वस्थ होना नहीं कहा जा सकता। चौथा आयाम अध्यात्म से सम्बन्ध रखता है। यह भी इस परिभाषा में जोड़ने की सलाह दी गयी है।

भारतीय मनीषियों के अनुसार स्वास्थ्य की परिभाषा निम्न प्रकार से है -

जो व्यक्ति सतत् आत्म भाव में स्थित रहता हो, वही पूर्ण स्वस्थ है।

मानव को निरोग बनाए रखने हेतु सदियों से महान प्रयास किए गये हैं तथा अनेक चिकित्सा विधियों की खोज भी की गयी है, जैसे - आयुर्वेद, यूनानी, एलोपैथी, होम्योपैथी, एक्यूपंक्चर, एक्यूप्रैशर, रेकी, 'प्राण-चिकित्सा', रंग चिकित्सा, आदि। निम्न पंक्तियों में अति संक्षेप से कुछ चिकित्सा पद्धतियों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

1. आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति :- उपरोक्त सभी विधियों में ***आयुर्वेद*** का ज्ञान प्राचीनतम है। भारत में खोजी गयी यह चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक जीवन जीने की कला है तथा जड़ी-बूटियों द्वारा उपचार करने की विधि है। इस विधि में जड़ी-बूटियों के अतिरिक्त रसायनों तथा भस्मों द्वारा भी उपचार किया जाता है, जो शीघ्रता से लाभ करता है। इस पद्धति का मानना है, कि मानव को संयमित जीवन अर्थात् प्राकृतिक जीवन जीना चाहिए तथा दैनिक जीवनचर्या सात्विक, यज्ञमय तथा ईश्वरमय जीने से रोगों की उत्पत्ति होने पर भी उनका शमन सरलता से हो जाता है। ईश्वरमय जीवन जीने का अर्थ है, कि प्राकृतिक शक्तियों (आकाशीय पिण्डों) द्वारा उत्पन्न किए जा रहे क्लेशों के शमन हेतु उन शक्तियों की पूजा-अर्चना करना अर्थात् उन क्लेशों के विपरीत स्व-संकेतों (Auto-suggestion) द्वारा अपने मनोबल को दृढ़ बनाए रखना।

'आयुर्वेद' में रोग के तीन कारण (दोष) - वात, पित्त एवम् कफ (त्रिदोष) माने जाते

हैं। मानव शरीर में जब तक वात (वायु), पित्त (क्षारीय तत्व), कफ (अम्लीय तत्व) संतुलित अवस्था में रहते हैं, शरीर स्वस्थ रहता है। इन तीनों के असंतुलन से रोगों का संक्रमण होता है। आयुर्वेद शास्त्र की एक मान्यता और है, कि :-

पूर्व जन्म कृतम् पापं, व्याधि रूपेण बाधते।
तच्छान्तिरौषधैदानैर्जप होम क्रियादिभिः[a] ।।

अर्थ :- पूर्व जन्म में किए गये पापों के कारण भी इस जन्म में रोगों की उत्पत्ति होती है तथा उन रोगों की शान्ति हेतु औषधि, दान, जप, होम आदि क्रियायें करना कर्त्तव्य हैं।

इसका अर्थ यह हुआ, कि पूर्व जन्म के पापों के कारण जन्म के साथ ही मानव अपने अवचेतन मन में ***'रोगबीज'*** लेकर आता है। इस ***'रोगबीज'*** को धातुगत वंश दोष के नाम से जाना जाता है। इस 'धातु-दोष' को होम्योपैथी में म्याज़्म (Miasm) की संज्ञा दी गयी है तथा यह **'रोगबीज'** जलवायु परिवर्तन, खान-पान की गड़बड़ी अथवा किन्हीं कारणों से प्राणशक्ति के शिथिल होने पर समय-समय पर अनेक तरुण (Acute) रोगों को प्रकट कर देता है।

'आयुर्वेद' में सामान्यतया ठंडे रोगी को गर्म दवा का तथा गर्म रोगी को ठंडी दवा का सेवन करवाया जाता है तथा अम्ल का शमन क्षारीय दवाओं से तथा पित्त (क्षार) की वृद्धि का शमन अम्लीय दवाओं से किया जाता है अर्थात् आयुर्वेद का चिकित्सा सिद्धान्त विपरीत चिकित्सा (Law of Opposites) पर आधारित है।

2. एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति :- 'ऐलोपैथी' की दवाएं रासायनिक पदार्थों से तैयार की जाती हैं और वे मानव शरीर में विकृत जीवन रसों को तीव्रता से संतुलित करने के अतिरिक्त कोशिकाओं (Cells) में भी परिवर्तन ला देती हैं। इन परिवर्तनों से रोगी जितनी तेज़ी से ठीक होता हुआ लगता है, वह किसी अन्य अंग के रोग से पीड़ित भी हो जाता है, जिसे आम भाषा में Side effects के नाम से जाना जाता है।

'एलोपैथी' की दवाओं में रोगाणुओं के संक्रमण को समाप्त करने हेतु बारम्बार Anti-Biotic दवाओं का सेवन कराया जाता है, जिससे रोगाणु मर जाते हैं और रोग सामयिक रूप से दब जाता है, परन्तु रोगी की **'प्राण-शक्ति'** इतनी शिथिल हो जाती है, कि उसे भूख नहीं लगती, नींद भी नहीं आती तथा पेट साफ रहने में कठिनाई होती है। इस प्रकार जिस बीमारी के विशेषज्ञ ने विशिष्ट रोग का इलाज किया होता है, वह इस बात से संतुष्ट रहता है, कि उसने वह रोग तो ठीक कर दिया, जिसके लिए रोगी उस विशेषज्ञ के पास आया था, परन्तु तब रोगी किसी अन्य अंग के रोग से पीड़ित होते देखा जाता है। ऐसा होने पर रोगी को दूसरे अंग के विशेषज्ञ के पास भेज दिया जाता है।

कुछ बलवान रोगी थोड़े अथवा कुछ लम्बे समय तक के लिए इस प्रकार रोग की अदला-बदली झेल जाते हैं। यह शून्य काल कई बातों पर निर्भर करता है, जैसे - ***(a)*** रोगी का अंग विशेष ***(b)*** रोग की तीव्रता ***(c)*** रोगी की उम्र ***(c)*** उस समय रोगी की **'प्राण-शक्ति'** का स्तर आदि। 'एलोपैथी चिकित्सा' सामान्यतया 'विपरीत-चिकित्सा (Law of opposite) के सिद्धान्त पर आधारित है अर्थात् यदि शरीर में अम्ल की अधिकता है, तो क्षारीय दवा से

---

a संदर्भ :—"माधव निदान"

उस अम्ल का शमन किया जाता है तथा क्षार का शमन अम्ल से करते हैं। इस चिकित्सा में तात्कालिक कष्ट के शमन हेतु रोगी में जिस रसायन की कमी होती है उसे बाहर से दे दिया जाता है और रोगी काफी राहत का अनुभव करता है। इस प्रकार रोगी के अंग का उपचार नहीं किया जाता। एलोपैथी में होम्योपैथी के सिद्धान्त के आधार पर रोगी के रोगाणुओं से वैक्सीन तैयार की जाती है और उपचार किया जाता है। चेचक की वैक्सीन का नाम सारे विश्व में प्रसिद्ध है, जिससे मानवता का बहुत कल्याण हुआ है। एलोपैथी में शल्य चिकित्सा द्वारा करोड़ो रोगियों को बहुत राहत (Relief) मिली है। इस क्षेत्र में एलोपैथी ने पूरी मानवता को चमत्कृत कर दिया है। एलोपैथी का मानना है, कि रोगी को किसी प्रकार भी हो, राहत (Relief) मिलना चाहिए। दूसरी ओर होम्यों दवाओं द्वारा सही उपचार मिल जाने पर अनेक मामलों में शल्य चिकित्सा की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, क्योंकि होम्यो चिकित्सा के पश्चात् रोगी के तात्कालिक रोग का एवम् भविष्य में रोगी बनने की प्रवृत्ति तक का सम्पूर्ण रूप से विनाश हो जाता है, ज़बकि एलोपैथी में ऐसा नहीं होता।

3. होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति :- *'होम्योपैथी' चिकित्सा पद्धति को समझने के लिए पहले* ***'सूक्ष्मता के सिद्धान्त'*** *के विषय में जानना आवश्यक है।*

सूक्ष्मता का सिद्धान्त :- मानव जीवन में एवम् पूरी सृष्टि में सूक्ष्म शक्तियाँ, भौतिक शक्तियों पर शासन करती देखी जाती हैं। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से हैं :-

***(i)* रेडियो तरंगें :-** रेडियो तरंगें अपनी तरंग दीर्घता (Wave Length) अथवा आवृत्ति की उच्चता (High Frequency) के अनुसार शक्तिशाली व कमज़ोर प्रसारण करती हैं, जैसे रेडियो प्रसारण में मध्यम तरंग (Medium Wave) की अपेक्षा सूक्ष्म तरंग-1 (Short Wave-1) अधिक दूरी तक भेदन कर पाती है और इसके द्वारा प्रसारण दूर तक पहुँचता है, जबकि सूक्ष्म तरंग-2 (Short Wave-2) द्वारा उससे भी अधिक शक्तिशाली प्रसारण होता है।

***(ii)* प्रकाश के सात रंग :-** इन्द्र धनुषी सातों रंगों की अलग-अलग तरंग दीर्घता होती है। उसी हिसाब से उनमें शक्ति भी क्रमशः कम व अधिक होती है। चतुर्थ सत्र में सातों रंगों की तरंग दीर्घता (Wave Length) बतलायी गयी है। क्ष-किरण (X-Ray) एवम् लेज़र किरण के चमत्कार को आज सभी पहचानते हैं।

(iii)* भोजन :-** मानव भोजन में रोटी से पानी का अधिक महत्त्व है। आदमी कुछ दिन बिना भोजन के रह सकता है, परन्तु पानी के बिना कदाचित् एक दिन भी रहना कठिन है, क्योंकि पानी भोजन से सूक्ष्म है। ***'प्राण वायु' के बिना तो एक दो मिनट भी जीवन दूभर हो जाता है, क्योंकि वायु जल से भी सूक्ष्म है।

***(iv)* मानव शरीर :-** 'हड्डी-माँस' की अपेक्षा 'रक्त' की महत्ता अधिक है। 'जीवन रसों' (Hormones) का महत्व रक्त से भी अधिक है। शरीर की 'कोशिकाएं' इससे भी अधिक महत्व रखती हैं, क्योंकि रक्त और जीवन रसों का उत्पादन कोशिकाओं में होता है। कोशिकाओं से अधिक महत्व **'प्राण-शक्ति'** (Electromagnetic Energy) का है, जो कोशिकाओं का निर्माण व पालना करती है। प्राण से अधिक महत्व **'मन'** का है। मन से **'बुद्धि'** और बुद्धि से अधिक शक्तिशाली होता है **'चित्त'**। चित्त से ऊपर है **'अहंकार'** और अन्त में **'आत्मा'** सर्वश्रेष्ठ एवम् सबसे शक्तिशाली है, क्योंकि यह सम्पूर्ण विश्व एवम् मानव देह उस चेतना (आत्मा) का विकास है।

(v) **कणों की सूक्ष्मता :-** एलेक्ट्रॉन का व्यास = 0.1×10^{-14} मि.मी.
प्रोटॉन का व्यास = 0.1×10^{-11} मि.मी.
न्यूट्रॉन का व्यास = 0.1×10^{-11} मि.मी.

क्योंकि 'एलेक्ट्रॉन' सबसे सूक्ष्म कण है अतएव सृष्टि की सृजन प्रक्रिया में इसका सबसे पहला स्थान है। यद्यपि 'प्रोटॉन' एवम् 'न्यूट्रॉन' भी सृजन कार्य में सहायक हैं, परन्तु 'एलेक्ट्रॉन' का स्थान प्रथम है अर्थात् **'ब्रह्मा'** सृष्टि रचना के क्रियाशील (Active) देवता है।

(vi) **औषधियाँ :-** ***'एलोपैथी'*** में गोली वाली दवा की अपेक्षा तरल सीरप शीघ्र असर करता है। तरल दवा की अपेक्षा इंजेक्शन, जो शिराओं में डाल दिया जाता है, प्रभावित अंग तक पहुँच कर तेज़ी से प्रभाव करता है। बैक्टीरिया की अपेक्षा वायरस अधिक गहरायी तक शरीर में रोग विष को फैलाता है। 'एलोपैथी' की तेज़ रासायनिक दवाएं जीवन रसों से आगे कोशिकाओं की संरचना तक का भेदन कर सकती हैं, अतएव कोशिकाओं की संरचना बदल जाती हैं।

'आयुर्वेद' में चूर्ण की अपेक्षा 'रस' एवम् 'भस्में' शीघ्र तथा देर तक प्रभाव रखती हैं। आयुर्वेदिक औषधियाँ 'वात-पित्त-कफ' अर्थात् तीन प्रकार के विकृत जीवन रसों (Harmones) के संतुलन को ठीक करती हैं परन्तु जब-जब खान-पान, जलवायु परिवर्तन अथवा शक्ति से अधिक शारीरिक एवम् मानसिक श्रम हो जाता है, तब-तब **'वंश-परम्परा'** से प्राप्त **'रोगबीज'** तमाम प्रकार के रोगों को उत्पन्न कर देता है। अतः 'आयुर्वेद' की औषधिओं का पूर्ण लाभ लेने हेतु प्राकृतिक, सात्विक एवम् यज्ञमय जीवन जीना आवश्यक है। दैनिक जीवनचर्या संयमित होगी तो ही इस चिकित्सा विधि का लाभ सम्भव है।

'होम्योपैथी' में मदरटिंक्चर की अपेक्षा उच्च शक्तिकृत दवाएं 3, 6, 12, 30, 200, 1000 इत्यादि क्रमशः अधिक प्रभावशाली होती हैं तथा उनका प्रभाव काल भी बहुत देर तक रहता है। 'होम्योपैथी' की कुछ शक्तियाँ तो महीनों प्रभाव रखती हैं। होम्योपैथी की दवाएं **'वंश-परम्परा'** से प्राप्त **'रोगबीज'** को भी नष्ट कर सकने में सक्षम होती हैं, क्योंकि ये उच्चशक्ति तरंगों के रूप में होती हैं। ये तरंगें मानव के **'अवचेतन-मन'**, जो अति उच्च आवृत्ति (Frequency) से निर्मित होता है, तक पहुँचकर रोग की तरंगों को नष्ट कर देती हैं तथा रोग का सम्पूर्ण विनाश हो जाता है।

सूक्ष्मता के सिद्धान्त को समझ लेने के पश्चात् उपरोक्त औषधियों के प्रभाव की तुलना स्पष्ट हो जाती है। सिद्धान्त तथा अनुभव दोनों से होम्यो दवाओं का प्रभाव सिद्ध है। ***सारांश यह है, कि सूक्ष्म शक्तियाँ स्थूल पदार्थों पर शासन करती हैं।*** आज शहरों में जो पीने का पानी सप्लाई किया जा रहा है, उसमें क्लोरीन एवम् फिटकरी के कण किस प्रकार सूक्ष्म विद्युत तरंगें बनकर हानि पहुँचा रहे हैं, इसकी समझ एवम् बचाव की वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में अधिकांश नागरिक अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित रहते हैं। कदाचित् इसी हानि को पहचान कर अमेरिका में जनता को आर.ओ.एस. (Reversible Osmosis System) द्वारा जल को साफ करके सप्लाई किया जाने लगा है। भारत में भी अब यथेष्ट जागरूकता आ गयी है तथा अधिकांश धनिक वर्ग ने इस प्रकार की मशीन से शुद्ध जल लेना आरम्भ कर दिया है।

4. रोगोत्तपत्ति का मूल कारण—'रोग-बीज' :- ***'ऐलोपैथी'*** का मानना है, कि सभी रोगों की शुरुआत संक्रमण (Infection) अर्थात् शरीर में रोगाणुओं (Bacteria and Virus)

के प्रवेश के कारण होती है। ***'आयुर्वेद' का मानना है, कि पूर्व जन्म में किए गए पापों के कारण मानव को रोगी शरीर की प्राप्ति होती है। 'होम्योपैथी'*** का कहना है, कि हर मानव-शरीर अपने माता-पिता से तीन प्रकार के ***'रोगबीज'*** (Miasm) लेकर पैदा होता है। ये तीनों ***'रोगबीज'*** चित्त में तरंगों के रूप में संग्रहीत रहते हैं। इन ***'रोगबीजों'*** की सघनता अलग-अलग हो सकती है। इन तीनों ***'रोगबीजों'*** को 'डॉ. सैम्युअल हैनीमेन' ने सोरा (Psora), सिफलिस (Syphilis) और साइकोसिस (Sycosis) का नाम दिया है। 'डॉ. हैनीमेन' जो होम्योपैथी के जनक थे, ने कहा है, कि जब-जब 'प्राण शक्ति' (Vital Force) कमज़ोर पड़ती है, तब-तब ये ***'रोगबीज'*** अनेक प्रकार की बीमारियों को जन्म देते हैं, क्योंकि तब-तब **'प्राण-शक्ति'** अर्थात् मानव शरीर की बाह्य संक्रमण (Infection) से लड़ने की क्षमता (Resistance Power) का ह्रास हो जाता है। ***'प्राण शक्ति'*** (Vital Force) के कमज़ोर पड़ने के निम्न कारण हो सकते हैं :-

(a) वातावरण में परिवर्तन अर्थात् अति शीत, अति गर्मी अथवा वर्षा में भीगना, पर्वतों पर, समुद्र के किनारे अथवा समुद्र तट पर जाना आदि। आकाशीय पिण्डों का प्रभाव भी रोगों को उत्पन्न करने में सहायक होता है।

(b) शारीरिक अथवा मानसिक शक्ति का एक सीमा से अधिक प्रयोग, जिससे आदमी अति से ज्यादा थक जाए अथवा अधिक विषय भोग, जिससे स्नायु संस्थान शिथिल हो जाये।

(c) चिन्ता, भय, एकाएक दुःख, प्रिय की मृत्यु अथवा विछोह अथवा अन्य मानसिक आघात।

(d) खान-पान की गड़बड़ी, अधिक खाना, ऐसा भोजन जो हज़म होने में भारी हो अथवा पौष्टिक भोजन की नितान्त कमी।

(e) विषाक्त वातावरण में कार्य करना, जैसे रसायनों का निर्माण करने वाली फैक्टरी का जहरीला धुँआ, आदि।

(f) बाह्य चोट, जिससे अधिक रस-रक्त का क्षय हो जाये अथवा विषैला भोजन करना, इत्यादि।

वस्तुतः शरीर में पहले से ही उपस्थित तीनों रोगबीज वातावरण में उपस्थित रोगाणुओं के आक्रमण के लिए एक प्रकार की अनुकूलता प्रदान करते हैं, जिसे ***'होम्योपैथी'*** में Susceptibility अर्थात् रोग को **'ग्रहण करने की सहजता'** के नाम से जाना जाता है। उपरोक्त छह कारणों से शरीर की रोगों से संघर्ष करने की क्षमता कम होते ही मानव बहुत-सी बीमारियों का शिकार हो जाता है। वैसे भी आमतौर पर हर व्यक्ति कमोवेश किसी-न-किसी बीमारी से जूझता ही रहता है और रोग की तरुण (Acute) अवस्था उपरोक्त छह परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हो सकती है।

5. होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति :- 'होम्योपैथी' की दवाएं शक्तिकृत (Potentisation) विधि से तैयार की जाती हैं और ***इन दवाओं की भेदन शक्ति मानव के पूरे अन्तःकरण तक पहुँचती है। शक्तिकृत होम्यो दवाएं चित्त में स्थित रोग की तरंगों को नष्ट कर देती हैं और इस प्रकार मानव 'मन' को चुस्त-दुरुस्त बनाकर रोग का सम्पूर्ण विनाश करने में सक्षम***

होती हैं। रोग मुक्ति की स्थिति में रोगी एक विशिष्ट प्रकार की आन्तरिक खुशी का अनुभव करता है, परन्तु सही दवा का चुनाव करना अपने आप में एक बहुत ही टेढ़ी खीर है तथा रोगी को रोग मुक्त होने में काफी समय भी लग सकता है। दवा के चुनाव का आधारभूत सूत्र है, कि मानव 'मन' उस विशिष्ट समय पर कितनी आवृत्ति (Frequency) पर 'स्पन्दन' कर रहा है, यदि यह स्पन्दन सूक्ष्मता से किसी यन्त्र द्वारा नापा जा सके और ठीक इसी आवृत्ति (Frequency) तथा समान शक्ति वाली 'होम्यो' दवा भी दे दी जाये, तो रोगी शीघ्र और पूरी तरह से रोगमुक्त हो सकता है। क्योंकि सही होम्यो दवा किसी अंग विशेष पर नहीं, बल्कि पूरे शरीर के सभी अंगों पर एक साथ समुचित प्रभाव डालती है तथा **'प्राण-शक्ति'** के विकृत प्रवाह को स्वाभाविक बना देती है, अतएव 'होम्यो' दवाओं से जन्मजात धातु दोष भी ठीक हो जाते हैं। हर **'होम्यो'** दवा एक विशिष्ट आवृत्ति की शक्ति तरंग होती है, जो उस पदार्थ के औषधीय गुणों को अपने में समाहित रखती है और समान रोग की आवृत्ति वाली तरंग को नष्ट कर देती है। ***रोगी केवल रोग मुक्त ही नहीं होता, बल्कि वह हृष्ट-पुष्ट भी हो जाता है। रोगी को अलग से टॉनिक की आवश्यकता भी नहीं होती।*** नीचे दिए गये ग्राफिक चित्रण से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि होम्यो दवा की **'शक्ति-तरंग'** स्वयं ही 180° आगे बढ़कर (Phase difference by 180°) रोग तरंग को निरस्त कर देती है तथा मानव शरीर की ***'प्राण-शक्ति'*** औषधि की **'शक्ति-तरंग'** के साथ प्राकृतिक रूप से मेल बिठा कर रोग के शमन में सहायक बनती है। चित्र संख्या 8.01 इस गणित को अधिक स्पष्ट करता है :-

होम्यो चिकित्सा का ग्राफिक चित्रण

होम्यो औषधि की स्पन्दन आवृत्ति (Frequency)

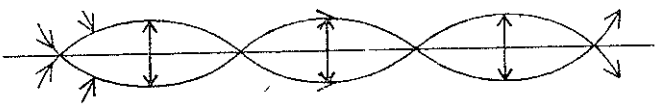

रोगी शरीर की स्पन्दन आवृत्ति (Frequency)

रोग मुक्त मानव शरीर की प्राणशक्ति का सम भाव में स्पन्दन

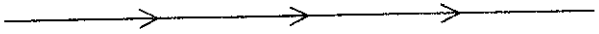

चित्र-8.01

हर 'होम्यो' दवा एक खास लक्षणों के समूह का बखान करती है। यही लक्षणों का समूह एक खास प्रवृत्ति (Tendency) को दर्शाता है। ऐसा लक्षणों का समूह अर्थात् औषधि की प्रवृत्ति रोगी के रोग लक्षणों की प्रवृत्ति से मिल जाये, खासकर रोगी के मानसिक लक्षण यदि मिल जाएं, तो दवा एक दम चमत्कारिक ढंग से रामबाण की तरह काम करती है। वस्तुतः मन के लक्षणों के मिलने का अर्थ है, रोगी की प्रवृत्ति की सही पहचान। होम्योपैथी का ***'भेषज-लक्षण-संग्रह'*** (Materia-Medica) अनेक प्रकार की मानवीय प्रवृत्तियों

का संग्रह है, अतएव प्रत्येक ***'होम्यो'*** दवा अपने आप में पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है, **जिस पूर्णता को समझने में अच्छे-अच्छे *'होम्यो'* डॉक्टर चकरा जाते हैं। इसीलिए हारकर वे 'आयुर्वेद' एवम् 'एलोपैथी' की तरह ही कई दवाएं मिला कर देना शुरू कर देते हैं। कई बार इन मिश्रित नुस्खों से सामयिक लाभ तो हो जाता है, परन्तु रोग का सम्पूर्ण शमन नहीं हो पाता। समाज में इसीलिए 'होम्योपैथी' अधिक सम्मान नहीं पा सकी, जबकि इसमें सर्वश्रेष्ठता के गुण विद्यमान हैं। यदि एक ही 'होम्यो' दवा चुन कर दी जाये और सही न भी हो, तो कम से कम वह अगली सही दवा की ओर इशारा कर देती है। यह बात अलग है, कि डॉक्टर उस मूक भाषा को समझ पाता है, कि नहीं।** *बहुत से लोग यह कहते पाये जाते हैं, कि 'होम्योपैथी' में अभी बहुत खोज करना बाकी है। उनका मानना है, कि जितनी खोजबीन 'ऐलोपैथी' में हुई है अथवा हो रही है, उस सब को देखते हुए 'होम्योपैथी' बहुत पीछे है। जबकि सच यह है, कि भौतिक स्तर पर की गयी भारी भरकम ऐलोपैथी की खोजें अभी तक उस एकीकृत मानव मन को पकड़ ही नहीं पायीं, जो पूरे शरीर के सभी अंगों का राजा है, जिसको पकड़ने भर से सारे अंगों की बीमारियाँ एक साथ ठीक होती हैं और* ***यही काम 'डॉ. सैमुअल क्रिश्चियन फ्रेडिरिक गाटफ्रीड हैनीमेन' ने अकेले कर दिखाया है।***

होम्योपैथी **"समान-चिकित्सा-पद्धति"** ***(Like Cures Like)*** **अर्थात्** ***"समः समम् शमयति" (Equal kills Equal)*** **और** ***"विषस्य विषमौषधम्"*** **(विष की औषधि विष है) के सिद्धान्तों पर आधारित है।** ठंडे रोगी को ठंडी दवा और गर्म रोगी को गर्म दवा से ही रोग का जड़मूल से विनाश होता है। 'होम्यो' चिकित्सा में किसी रोगाणु (Bacteria अथवा Virus) को मारने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। **सही 'होम्यो' दवा रोगी की *'प्राण शक्ति'* को इतना सतेज कर देती है, कि सारे *'रोगाणु'* स्वयम् भाग जाते हैं और रोगी की भूख, नींद सभी कुछ उत्तम हो जाती है। 'सूक्ष्मता' के सिद्धान्त के अनुसार 'होम्यो' दवा की भेदन शक्ति सर्वोच्च है।**

संयोग से 'होम्यो चिकित्सा पद्धति' के सिद्धान्त की चर्चा श्रीमद् भागवत-महापुराण[a] में भी की गयी है।

श्लोक - ***आमयो यश्च भूतानां जायते येन सुव्रत।***
तदेव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सितम्।। *(5/33)*

अर्थ :- प्राणियों को जिस पदार्थ के सेवन से जो रोग हो जाता है, वही पदार्थ चिकित्सा विधि के अनुसार प्रयोग करने पर क्या उस रोग को दूर नहीं करता ? अर्थात् वही पदार्थ सूक्ष्मीकरण विधि से तैयार करने पर रोग का समूल नाश कर देता है।

उदाहरणार्थ यदि संखिया विष (Arsenic Poison) स्थूल रूप में भूल से अथवा किसी भी कारण से खा लिया जाये, तो इसी विष की होम्यो विधि से तैयार की गयी दवा इस विष से उत्पन्न सभी लक्षणों का समूल नाश करने में सक्षम है। अथवा किसी भी रोग में संखिया विष के सदृश उत्पन्न लक्षणों को संखिया विष से बनी सूक्ष्मीकृत होम्यो दवा रामबाण का कार्य करती है।

---

a *श्रीमद् भागवत महापुराण, प्रथम खण्ड, पञ्चम अध्याय, पन्द्रहवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर, वि0सं0 2047, पृष्ठ-66*

श्रीमद् भागवत पुराण के अतिरिक्त होम्योपैथी के सिद्धान्त ***'विषस्य विषमौषधम्'*** की चर्चा आयुर्वेद शास्त्र में भी की गयी है। इसका अर्थ यह हुआ, कि प्राचीन काल में भारतीयों को होम्योपैथी जैसी चिकित्सा पद्धति का ज्ञान था। यद्यपि होम्यो चिकित्सा विधि का मानव शरीर पर गहन प्रभाव होता है, तथापि यह एक अति सूक्ष्म विज्ञान होने के कारण व्यवहार (Practice) में अति कठिन है। इसीलिए लगता है, कि आज की भाँति ही वैदिक काल में भी यह विद्या लोकप्रिय नहीं हो पायी। ऐसा देखा जाता है, कि इसकी अति सूक्ष्मता के कारण बहुधा रोगी तथा डॉक्टर दोनों ही धैर्य नहीं रख पाते।

6(a) होम्यो औषधि के निर्वाचन का एक उदाहरण :- होम्योपैथी में औषधि के चुनाव में भौतिक लक्षणों की अपेक्षा मानसिक लक्षणों को तथा मानसिक लक्षणों से ऊपर बुद्धि सम्बन्धी लक्षणों को वरीयता दी जाती है। अन्त में यह भी जानना अति महत्वपूर्ण है, कि रोगी की बाह्य वातावरण के प्रति दैहिक तथा मानसिक प्रतिक्रिया क्या है ? उदाहरण :-

***(a)* भौतिक लक्षण :-** जाँघों में दाद की तरह के उद्‌भेद, गले के पीछे बलगम गिरना तथा घुटनों में कमजोरी।

***(b)* मानसिक लक्षण :-** समाज के लोगों से मिलने जुलने की इच्छा का न रहना, कुछ खास लोगों का साथ एकदम असह्य।

***(c)* बुद्धि सम्बन्धी लक्षण :-** किसी भी बात को समझने में देरी लगना अर्थात् तत्काल कोई बात न समझ सकना।

***(d)* प्रकृति :-** सूर्य की गर्मी अथवा गैस की रोशनी से सिर दर्द, संगीत से शोकातुर, मानसिक कार्य न कर सकना, दूध माफिक न आना, ठंड से रोग में वृद्धि।

रोगी के उपरोक्त चारों प्रकार के लक्षण समूहों का एक ही दवा से मेल होना आवश्यक है, तभी वह औषधि रोगी को सम्पूर्ण रूप से आरोग्य करेगी। इस औषधि का नाम है ***'नेट्रमकार्ब'***[a]। इस चमत्कारपूर्ण सफलता हेतु थोड़ा धैर्यपूर्वक क्रमशः नीची शक्ति से ऊपर तक की शक्ति की दवा दी जाती है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है, कि होम्योपैथी शरीर, मन, बुद्धि एवम् बाह्य वातावरण (ब्रह्माण्ड) को आपस में संयुक्त मानती है, अलग नहीं। इसीलिए रोगी सम्पूर्ण रूप से निरोग हो पाता है। वस्तुतः इससे भी ऊपर एक और समझ है, कि चित्त में पूर्व जन्म के रिकॉर्ड किए गये पाप पूर्ण संस्कारों के प्रभाव से वर्तमान जीवन में मन एवम् बुद्धि संचालित होते हैं तथा पूर्व जन्म में अर्जित ***'प्रवृत्ति'*** के अनुरूप रोग उत्पन्न होते हैं। ***इस प्रकार होम्योपैथी विज्ञान में सम्पूर्णता (Totality) की समझ है तथा इस विधि से चिकित्सा किए जाने पर मानव सम्पूर्ण रूप से निरोग हो सकता है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा बतलायी गयी स्वास्थ्य सम्बन्धी परिभाषा के स्तर को प्राप्त कर सकता है।*** तत्पश्चात् उसे सुखद मृत्यु प्राप्त करने के लिए प्राकृतिक जीवन जीना चाहिए।

(b) होम्यो औषधियों के निर्माण की विधि :- मान लीजिए, साधारण नमक से होम्यो दवा बनानी है, तो एक शीशे के बड़े बर्तन (Flask) में कुछ वाष्पित जल (Distilled Water)

---

a *संदर्भ : होम्योपैथिक औषधियों का सजीव चित्रण—लेखक डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पृष्ठ-463*

लिया जाता है। उसमें थोड़ा-थोड़ा साधारण नमक डाला जाता है तथा उसे शीशे की डंडी से खूब हिला-हिला कर घोल लिया जाता है। जब यह पूरा घुल जाता है तो इसे मूल अर्क (Mother Tincture) के नाम से जाना जाता है। यदि कुछ अंश अनघुला रह जाता है, तो उसे छान कर अलग कर लिया जाता है अर्थात् अब उस पानी में नमक को इससे अधिक घोलने की क्षमता नहीं रह गयी है, इसलिए इस घोल को Saturated Solution कहा जाता है।

अब अलग से लिए गये एक टैस्ट ट्यूब में निन्यानबे मि.लि. वाष्पित जल लिया जाता है तथा बड़े बर्तन (Flask) से एक मि.लि. नमक का Saturated घोल इस ट्यूब में डाला जाता है, तत्पश्चात् इस ट्यूब को दस बार हाथ से झटके दिए जाते हैं। सिद्धान्त रूप से यह सेन्टीमल गणना की पहली पोटेन्सी (1c) की शक्तिकृत होम्यो दवा बन गयी। अब एक अन्य ट्यूब में निन्यानवे भाग वाष्पित जल लेते हैं और पहली शक्तिकृत पोटेन्सी वाली ट्यूब से एक मि.लि. घोल को इस दूसरी वाली ट्यूब में डालकर हाथ से दस बार ताकतवर झटके दिए जाते हैं, तो यह सेन्टीमल स्केल (Centimal Scale) की दूसरी पोटेन्सी (2c) की दवा बन गयी। इसी प्रकार तीसरी ट्यूब ली जाती है, उसमें भी निन्यानबे भाग वाष्पित जल लिया जाता है तथा दूसरी पोटेन्सी वाली शीशी से इसमें एक मि.लि. घोल डालकर दस बार खूब ताकत से झटके दिए जाते हैं। अब यह तीसरी शक्ति (3c) की दवा बन गयी। इसी प्रकार लगातार पदार्थ की मात्रा कम होती जाती है तथा क्रमशः अगली ट्यूबों में दवा की शक्ति में वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार तीस, दो सौ, एक हजार, दस हजार शक्ति से भी आगे की दवा बनायी जाती है। एवेगैड्रो (Avegadro) के सिद्धान्त के अनुसार एक ग्राम पदार्थ में 6.02×10^{23} अणु (Molecules) होते हैं, जबकि होम्यो दवा की सूक्ष्मीकरण (Potentisation) प्रक्रिया में बारहवीं शक्ति के पश्चात् पदार्थ का एक भी अणु (Molecule) शेष नहीं रहता, मात्र शक्ति ही अधिक से अधिक उच्च आवृत्ति (frequency) की ओर बढ़ती जाती है।

आजकल तो तेज घूमने वाली मशीनों तथा कम्प्यूटर चालित स्केल द्वारा यह सारा कार्य आसानी से तथा अति शीघ्रता से पूरा हो जाता है।

(c) होम्यो औषधिओं की सेवन विधि :- होम्योपैथी में झटकों द्वारा रगड़ उत्पन्न होती है। इस प्रकार रगड़ने और पदार्थ की मात्रा कम करते जाने से पदार्थ में निहित चुम्बकीय विद्युत शक्ति प्रभावशाली ढंग से प्रकट हो जाती है तथा जितनी बार यह मात्रा कम होती है और घर्षण किया जाता है, दवा की शक्ति अधिक से अधिक ऊँची होती जाती है तथा मानव शरीर में व्याप्त **'चुम्बकीय-विद्युत-शक्ति (प्राण)' पर होम्यो दवा की सीधी क्रिया होती है।** होम्यो दवा जीभ पर गोलियों अथवा टिंक्चर द्वारा किसी भी प्रकार से छू देने मात्र से ***'प्राण'*** पर अपनी क्रिया करने लग जाती है। होम्यो दवाओं का प्रभाव दवा की शक्ति (Potency) के अनुरूप अधिक देर तक बना रहता है। जैसे - 6 पोटेंसी की अपेक्षा 30 पोटेन्सी की दवा अधिक देर तक कार्य करती रहती है। होम्यो दवा की एक लाखवीं शक्ति (CM) का प्रभाव छह माह से भी अधिक समय तक रह सकता है, अतएव होम्यो दवाओं को बारम्बार दोहराना मना है। 30 पोटेंसी सामान्यतया एक दिन पूरा तथा इससे भी अधिक तथा 200

पोटेन्सी को एक सप्ताह तक प्रभावशाली माना जाता है। दवा को दोहराने के सामान्य दिशा-निर्देश यही माने जाते हैं। शेष रोग की गम्भीरता तथा तीव्रता आदि कई अन्य बातों पर भी निर्भर करता है, अतएव डॉक्टर का परामर्श अति आवश्यक है।

चेतावनी :- यथासंभव 30 तथा 200 शक्ति की दवाओं का प्रयोग करके ही रोगों का उपचार करना चाहिए। 1000 शक्ति, विशेषकर 10000 शक्ति तथा इस से ऊपर की शक्ति वाली दवाओं का प्रयोग तब तक नहीं करना चाहिए जब तक कि रोग बहुत पुराना (chronic) न हो तथा मानसिक लक्षण पूरी तरह से न मिलते हों, क्योंकि गहराई तक प्रभाव रखने वाली औषधियों से औषिधि रोग (drug disease) हो सकता है, जो जीवन में अति कष्टकारक बन सकता है।

7. आयुर्वेद में औषधि बनाने तथा सेवन की विधि :- आयुर्वेद में औषधियों को तैयार करने एवम् सेवन करने की पारम्परिक विधियों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से हैं :-

(i) खरल द्वारा कूट, पीस व छानकर - शीतोपलादि विचूर्ण बनाया जाता है, जिसे शहद से, जल से अथवा दूध के साथ सेवन करने का विधान है।

(ii) पानी में पका कर चिरायते का क्वाथ बनाकर, सीधा-सीधा मरीज को सेवन करवा दिया जाता है।

(iii) हरड़ का गाय के मूत्र में निश्चित दिनों तक डुबो कर, शोधन किया जाता है, तब मरीज को सेवन हेतु दी जाती है।

(iv) भस्मों को बनाने की विधि में मिट्टी के बर्तन में मोती अथवा मूँगा को रखकर चारों तरफ से ठीक से बन्द करके गड्ढ़े में चारों ओर से आग में पकाया जाता है। आग के ठंडे होने पर भस्म तैयार हो जाती है। इसे शहद आदि के साथ सेवन करने का विधान है।

(v) कुछ औषधियों को बारम्बार पकाया जाता है तथा फिर उन्हें ठंडा किया जाता है, फिर पकाया जाता है और फिर ठंडा किया जाता है।, ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार वह औषधि अधिक शक्तिशाली बन जाती है। इसे पुट लगाना कहते हैं। मुलायम लोहे (Mild Steel) को जब लाल गर्म करके एकदम से ठंडे पानी में डुबो दिया जाता है, तो वह इस्पात (Steel) बन जाता है, मुड़ता नहीं है। इस विधि को Tempering विधि कहा जाता है। यही प्रयोग औषधि क्षेत्र में भी किया गया लगता है और इसे पुट (शक्तिकृत) लगाना कहा गया है। यही शब्द होम्योपैथी में पोटेन्सी के रूप में प्रयुक्त किया गया लगता है। परन्तु वहाँ पर शक्तिकृत करने की विधि एकदम भिन्न है, जिसका कि वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

8. होम्यो चिकित्सा पद्धति की अन्य चिकित्सा पद्धतियों से तुलना :- (एक उदाहरण) किसी भी रोगी का गहरायी से अध्ययन करने पर यह पता चलता है, कि रोगी के किसी खास अंग पर विशेष कष्ट रहता है, परन्तु शरीर के अन्य अंग भी कमोवेश पीड़ित अवश्य रहते हैं, जैसे कि किसी रोगी को पेशाब की थैली में पथरी होती है, तो साथ में कमर दर्द, पेशाब में दर्द व मिर्च लगने जैसी जलन, पेशाब में कभी-कभी खून जाना, पेशाब में ऑक्जेलेट्स का पाया जाना। आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति में अलग-अलग लक्षणों के लिए

अलग-अलग निश्चित नुस्खे ढूँढ़ लिए गये हैं, जबकि होम्योचिकित्सा पद्धति में पेशाब की थैली में पथरी के नाम से कोई निश्चित नुस्खा नहीं होता। सम्पूर्ण लक्षण समूह को ध्यान में रखते हुए एक ही होम्यो दवा को चुनना होता है। भौतिक लक्षणों के मेल हो जाने के पश्चात् रोगी के मानसिक लक्षण की खोज की जाती है, जैसे - पेशाब की नली में जलन के साथ **अत्यधिक बेचैनी तथा रोगी द्वारा जननेन्द्रिय सम्बन्धी निर्लज्जता का व्यक्त किया जाना।** ऐसे मानसिक लक्षण के मिलते ही **''कैंथरिस''** नामक दवा पथरी को निकाल कर बाहर फेंकने के साथ-साथ रोगी को एकदम भला चंगा बना देती है तथा उसकी पथरी बनने की प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाती है, जबकि अन्य पैथी में ऐसा नहीं होता, क्योंकि अन्य किसी भी पैथी में होम्योपैथी की भाँति मानसिक लक्षणों को भौतिक लक्षणों के साथ रखकर इलाज करने की प्रक्रिया नहीं है। अन्य पद्धतियों में मानसिक लक्षणों को भौतिक लक्षणों से अलग माना जाता है, जबकि होम्योपैथी का विशेष रूप से मानना है, कि मन ही सभी प्रकार के रोगों का कारक है। सर्व प्रथम मन रोगी बनता है, जिसका बीज हमें माता-पिता से **'धातु दोष'** के रूप में प्राप्त होता है। इस रोगबीज (Miasm) की तरंगें अवचेतन मन में स्थित रहती हैं और **'प्राण-शक्ति'** के शिथिल होते ही इन्हीं तरंगों से भौतिक लक्षणों का विकास हो जाता है। **'वंशगत-धातु-दोष'** तोड़ने की (Anti-miasmatic) दवा देने के पश्चात् रोग सरल रोगों में परिवर्तित हो जाता है। इस **'वंशगत-धातु-दोष'** से मानसिक तथा भौतिक सभी प्रकार के लक्षण समूह का विकास होता है, यह विषय[a] काफी गूढ़ है।

हठयोग की क्रियाओं एवम् प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा भी रोग निवारण होते देखा जाता है और वह तरीका उत्तम भी है। कुछ अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ भी हैं, जैसे - एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर या तैल मर्दन (मसाज), रंगों द्वारा चिकित्सा एवम् रेकी चिकित्सा आदि। परन्तु इन सबमें कितनी उपादेयता है, कुछ निश्चित नहीं है, कारण, कि रोगी में छिपा धातु दोष ही सबसे बड़ी बाधा है, जो रोगी को पूरी तरह से रोग मुक्त नहीं होने देता। बहुत से शिशु पैदा होते ही अनेक रोगों से घिर जाते हैं। **'पीलिया'** रोग से पीड़ित होना तो आजकल हाल के उत्पन्न अनेक शिशुओं में देखा जा रहा है। 'एड्स' से पीड़ित माता-पिता की संतान सौ फीसदी **'एड्स'** से पीड़ित देखी जाती है। ***शास्त्रों में कहा गया है, कि माता-पिता के द्वारा किए गए दुष्कर्मों का फल उसकी संतान को कई पीढ़ियों तक भोगना पड़ता है। 'एड्स' का उदाहरण इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। एड्स के अतिरिक्त अन्य मामलों में रोगबीज इतना स्पष्ट नहीं दिखता, परन्तु समय-समय पर वह अनेक तीव्र रोगों (Acute disease) के रूप में प्रकट होता रहता है।*** अतएव यह **'धातु-दोष'** जिस सूक्ष्म स्तर पर स्थित रहता है, उस सूक्ष्म स्तर की औषधि जब तक रोगी को न मिले, रोगी किसी न किसी जीर्ण (Chronic) रोग से आजीवन परेशान ही रहता है। ***'होम्योपैथी' की सर्वश्रेष्ठ खोज***

a पुस्तक के भाग-3 में *'Scientific Analysis of Homoeopathy'* लेख में यह सारी प्रक्रिया विस्तार से दी गयी है। अधिक जानकारी हेतु होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान का गहरायी से अध्ययन करना अभीष्ट है।

धातु दोष को दूर करना ही है। सभी प्रकार के धातु दोषों को दूर करने की दवा अर्थात् anti-miasmatic औषधि देने के पश्चात् ही चुनी हुई होम्यो दवा रोगी को रोगमुक्त कर पाती है। ***गर्भकाल में यदि माता को उसकी धातुगत (Constitutional) होम्यो औषधि दी जाए, तो माता शीघ्र रोगमुक्त हो सकती है तथा शिशु भी स्वस्थ पैदा होता है।***

9. कर्म-फल भोग से मुक्ति :- वास्तव में अपने पापकर्मों को भोगने हेतु जीवात्मा उसी माता-पिता के गर्भ से जन्म लेती है, जहाँ पर विशिष्ट प्रकार का ***'रोगबीज'*** उस माता-पिता से मिलना सम्भव होता है। यह सारा खेल उस कर्मफलप्रदाता भगवान विष्णु अर्थात् Super Computer का है, जो इतनी सूक्ष्मता से पूरी सृष्टि पर अपनी पैनी दृष्टि रखता है तथा उस पर सजगता से शासन करता है और इस प्रकार सभी जीवात्माएं तरह-तरह के क्लेशों से कदाचित् ही कभी मुक्त हो पाती हैं, जब तक कि वे परमात्मा की शरण में जाकर संसार सागर से पार नहीं हो जातीं। ***होम्यो दवाएं रोगी को उसके अन्तर में निहित पाप कर्मों से बहुत हद तक छुड़ाने में सहायता करती हैं तथा उसके चित्त को निर्मल भी बना देती हैं। उसकी पाप कर्म करने से निवृत्ति भी हो जाती है। जैसे - क्रोधी का क्रोध करना, शराबी की शराब तथा व्यभिचारी की व्यभिचार की प्रवृत्ति सुधर जाती है और वह बहुत कुछ ईश्वर के द्वार तक भी पहुँच जाता है। आगे का रास्ता उसे स्वयम् को चलना चाहिए। अस्तु !***

हरिः ॐ तत् सत् !